पाठ 19

कटुक वचन मत बोल

– श्री रामेश्वर दयाल दुबे

वाणी की मिठास पर भक्ति कालीन कवियों ने बार–बार बल दिया है। प्रस्तुत पाठ में वाणी की मृदुलता को अथवा बात कहने के अंदाज को कई उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। वाणी सबके पास है पर उसका सम्यक् समुचित प्रयोग हर किसी को नहीं आता। समय और सन्दर्भ के अनुरूप हम वाणी का कैसे प्रयोग करें यह हम अपने परिवेश से सीखते और अपने अनुभवों से मांजते हैं। चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस द्वारा जीभ और दाँत के उदाहरण के जरिए लेखक ने मीठी वाणी के सत्कार और कटु वचन के अस्वीकार को स्पष्ट किया है।

दास प्रथा के दिनों में एक मालिक के पास अनेक गुलाम थे, जिनमें एक था लुकमान। लुकमान था तो गुलाम, किन्तु वह बड़ा बुद्धिमान था। उसकी प्रशंसा इधर–उधर फैलने लगी। एक दिन उसके मालिक ने उसे बुलाया और कहा–''सुनते हैं, तुम बहुत होशियार हो। मैं तुम्हारा इम्तहान लूँगा। अगर तुम कामयाब हो गए, तो तुम्हें गुलामी से छुट्टी दे दी जाएगी। अच्छा जाओ। एक मरे हुए बकरे को काटो और उसका जो हिस्सा सबसे बढ़िया हो, उसे ले आओ।''

लुकमान ने वैसा ही किया। एक बकरे को कत्ल किया और उसकी जीभ लाकर मालिक के सामने रख दी। कारण पूछने पर लुकमान ने कहा–''अगर शरीर में जीभ अच्छी हो, तो फिर सब अच्छा–ही–अच्छा है।''

मालिक ने कहा–''अच्छा, इसे उठा ले जाओ और अब बकरे का जो हिस्सा सबसे बुरा हो, उसे ले आओ।''

लुकमान बाहर गया, लेकिन थोड़ी देर में उसने उसी जीभ को लाकर मालिक के सामने फिर रख दिया। कारण पूछने पर लुकमान ने कहा– ''अगर शरीर में जीभ अच्छी नहीं है, तो फिर सब बुरा–ही–बुरा है।''

एक दूसरी घटना है। एक जिज्ञासु चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के पास पहुँचा और उसने उनसे पूछा–''यह बताइए कि दीर्घजीवी कौन होता है?''

वृद्ध कन्फ्यूशियस मुस्कराए और बोले– ''जरा उठकर मेरे पास आइए और मेरे मुँह में देखिए–जीभ है या नहीं?''

जिज्ञासु ने देखकर कहा– ''जी हाँ, जीभ तो है।''

कन्फ्यूशियस ने फिर कहा– ''अच्छा, अब देखिए कि दाँत हैं या नहीं?''

जिज्ञासु ने देखकर कहा–'' दाँत तो एक भी नहीं है।''

अब कन्फ्यूशियस ने कहा–''जीभ तो दाँत से पहले पैदा हुई थी। उसे दाँतों से पहले जाना चाहिए था। ऐसा क्यों नहीं हुआ?''

''मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है। आप ही बताइए।''

कन्फ्यूशियस बोले–''जीभ कोमल है, दाँत कठोर हैं। जिसमें लचीलापन होता है, जो नम्र होता है, वह अधिक समय तक जीता है, जीवन में जीतता है।''

ये दो कहानियाँ हैं, किन्तु एक ही सत्य को उद्‌घाटित करती हैं और वह यह कि जीवन में वाणी का बहुत बड़ा महत्त्व है।

वाणी तो सभी को मिली हुई है, परन्तु बोलना किसी–किसी को ही आता है। बोलते तो सभी हैं, किन्तु क्या बोलें, कैसे शब्द बोलें, कब बोलें–इस कला को बहुत कम लोग जानते हैं। एक बात से प्रेम झरता है, दूसरी बात से झगड़ा होता है। कड़वी बात ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किए हैं। जीभ ने दुनिया में बहुत बड़े–बड़े कहर ढाए हैं। जीभ होती तो तीन इंच की है, पर वह पूरे छह फीट के आदमी को मार सकती है। संसार के सभी प्राणियों में वाणी का वरदान मात्र मानव को मिला है। उसके सदुपयोग से स्वर्ग पृथ्वी पर उतर सकता है और उसके दुरुपयोग से स्वर्ग भी नरक में परिणत हो सकता है। भारत विनाशकारी महाभारत का युद्ध वाणी के गलत प्रयोग का ही परिणाम था।

इसीलिए सदा–सदा से यह कहा जाता है कि किसी का हृदय अपनी कटुवाणी से विचलित मत करो। कदाचित् मन्दिर और मस्जिद तोड़नेवाले को क्षमा मिल जाए तो मिल जाए, किन्तु हृदय मन्दिर तोड़ने वाले को क्षमा कहाँ?

मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर।

श्रवण द्वार ह्वै संचरै, सालय सकल शरीर।

कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करै तन छार।

साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार।।

स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री अपने विनम्र स्वभाव और मधुर वाणी के लिए प्रसिद्ध थे। प्रयाग में एक दिन उनके घर पर किसी नौकर से कोई काम बिगड़ गया। श्रीमती शास्त्री का क्रोध में आना स्वाभाविक था। उन्होंने नौकर को बहुत डाँटा और उसके साथ सख्ती से पेश आईं। शास्त्री जी भोजन कर रहे थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा– ''अपनी जबान क्यों खराब कर रही हो? लो, तुम्हें एक शेर सुनाऊँ–

कुदरत को नापसन्द है सख्ती जबान में।

इसलिए तो दी नहीं हड्डी जबान में।''

और फिर मुस्कराते हुए शास्त्री जी ने आगे कहा– ''जब एक शेर सुना है, तो एक दूसरा शेर भी सुन लो–

जो बात कहो, साफ हो, सुथरी हो, भली हो।

कड़वी न हो, खट्‌टी न हो, मिश्री की डली हो।।''

कहना न होगा, इन शेरों को सुनकर श्रीमती शास्त्री का क्रोध का पारा बहुत नीचे उतर गया था।

यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि सभी बातें ऐसी नहीं हो सकतीं, जो दूसरों को प्रिय ही लगें। सत्य कभी–कभी कड़वा होता है। कुछ बातें कहनी ही पड़ती हैं, किन्तु ऐसे अवसर पर

होना यह चाहिए कि बात भी कह दी जाए और उसमें वह कडुवाहट न आने पाए, जो दूसरे के हृदय को विदीर्ण कर देती है। जरूरी नहीं है कि जीभ की कमान से सदा वचनों के बाण ही छोड़े जाएँ। वाक्चातुरी से कटु सत्य को प्रिय और मधुर बनाया जा सकता है।

किसी राजा ने स्वप्न देखा कि उसके सारे दाँत टूट गए हैं। ज्योतिषियों से फल पूछा। एक ने कहा– ''राजन्, आप पर संकट आने वाला है। आपके सब संबंधी और प्रियजन आपके सामने ही एक–एक कर मर जाएँगे।''

दूसरे ज्योतिषी ने कहा,'' आप अपने सारे संबंधियों और प्रियजनों से अधिक काल तक संसार का सुख–ऐश्वर्य भोगेंगे।'' दोनों कथनों का सत्य एक ही है, किन्तु पहले ज्योतिषी को कारावास मिला और दूसरे को पुरस्कार।

सुबह–सुबह बुलबुल ने ताजे खिले फूल से कहा–''अभिमानी फूल! इतरा मत। इस बाग में तेरे जैसे बहुत फूल खिल चुके हैं।'' फूल ने हँसकर कहा–'' मैं सच्ची बात पर नाराज़ नहीं होता, पर एक बात है कि कोई भी प्रेमी अपने प्रिय से कड़वी बात नहीं कहता।''

यदि आपकी वाणी कठोर है, तीखी है, कर्कश है तो उसे सुधारिए, मीठी बनाइए, नहीं तो लोकप्रिय व्यक्तित्व का सपना अधूरा ही रह जाएगा।

शब्दार्थः– **जिज्ञासु**–जानने की इच्छा करने वाला, पूछताछ करने वाला, **प्रयाग** – इलाहाबाद, **विदीर्ण**–बीच से फाड़ा हुआ, टूटा हुआ, भग्न, **वाक्चातुरी**–हाजिर जवाब, **कुदरत** – प्रकृति या ईश्वरीय शक्ति, **विचलित** – अस्थिर, चंचल, **सख्ती** – कठोरता, कड़ाई, **कहर** – आफत, विपत्ति, **दीर्घजीवी** – लम्बी उम्र या आयु वाला।

अभ्यास

पाठ से

1. लुकमान ने बकरे के शरीर के सबसे अच्छे और बुरे हिस्से के चयन में जीभ को ही क्यों चुना?
2. चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के कथन के जरिए लेखक क्या बताना चाहता है ?
3. लेखक ने हृदय को तोड़ने वालों को क्षमा न देने की बात क्यों कही है?
4. किसी के द्वारा प्रयोग किए कठोर वचन शरीर में चुभते हैं। क्यों ? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
5. श्रीमती शास्त्री का क्रोध का पारा किस शेर को सुनकर नीचे उतर गया और क्यों ?
6. श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने शेर के माध्यम से अपनी पत्नी को क्या समझाने का प्रयास किया, स्पष्ट कीजिए।
7. दोनों ज्योतिषियों ने राजा को एक ही बात कही, उनके कहने के तरीके में आपको क्या अंतर लगता है?
8. लोकप्रिय बनने के लिए आपको क्या करना होगा ?

पाठ से आगे

A4U5HC

1. ''जीभ कोमल है, दाँत कठोर हैं। जिसमें लचीलापन होता है, जो नम्र होता है, वह अधिक समय तक जीता है। इस उक्ति पर आप अपना अभिमत दीजिए।
2. वाणी तो सभी को मिली हुई है, परन्तु बोलना किसी–किसी को ही आता है। ऐसा कहा जाता है। क्या आप इस तरह के लोगों से मिले हैं जो बातें करते समय बिना सोचे–समझे बोल जाते हैं। उनके बारे में लिखिए।
3. लुकमान के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं, कि जीभ अच्छी नहीं तो सब बुरा ही बुरा है। तर्क सहित अपने विचार रखिए।
4. 'एक बात से प्रेम झरता है और दूसरी बात से झगड़ा होता' है। इस तरह के अनुभव आप सभी के भी रहे होंगे इसके बारे में आपस में बात कर लिखिए।
5. वाक् चातुर्य से कटु वचन को प्रिय और मधुर बनाया जा सकता है, इस बात पर विचार करते हुए अपनी समझ को लिखिए।
6. आपके अपने अनुभव के हिसाब से जीवन में वाणी का क्या महत्व है? अपने अच्छे और बुरे अनुभवों को रखिए।
7. 'कड़वी बात ने संसार में न जाने कितने झगड़े पैदा किए हैं'– कोई पौराणिक या ऐतिहासिक घटना को आधार बनाकर इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।

भाषा से

AG8DXH

1. पाठ में विनम्र स्वभाव, मधुर वाणी, गलत प्रयोग, विनाशकारी महाभारत, अभिमानी फूल, मीठी वाणी जैसे विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है अपने शिक्षक के सहयोग से पता कीजिये कि उक्त शब्द विशेषण के किन भेदों के उदाहरण हैं ?
2. पाठ में आए कुदरत, जबान, नापसंद, शेर, सख्ती जैसे विदेशज शब्दों के पर्यायवाची शब्द (किसी शब्द–विशेष के लिए प्रयुक्त समानार्थक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। यद्यपि पर्यायवाची शब्द समानार्थी होते हैं किन्तु भाव में एक–दूसरे से किंचित भिन्न होते हैं।) खोज कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. वाक्य संरचना को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए–
    1. उसकी प्रशंसा इधर–उधर फैलने लगी।
    2. दास प्रथा के दिनों में एक मालिक के पास अनेक गुलाम थे, जिनमें एक था लुकमान।
    3. एक दिन उसके मालिक ने उसे बुलाया और कहा सुनते हैं तुम बहुत होशियार हो। पहले वाक्य में एक क्रिया अथवा एक ही विधेय है उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य है और एक आश्रित या सहायक उपवाक्य है। यह संपूर्ण वाक्य मिश्र वाक्य है। तीसरे वाक्य में दो वाक्य हैं जो 'और'

शब्द से जुड़े हैं और दोनों स्वतंत्र है जिन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं। पाठ से इस प्रकार के दो–दो वाक्यों को चुन कर लिखिए। यह भी जानने का प्रयास कीजिए कि मिश्र वाक्य में आश्रित उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य है, या विशेषण अथवा क्रिया विशेषण उपवाक्य है। आप भी उक्त तीनों प्रकार के दो–दो वाक्यों की रचना कीजिए।

4. पाठ में दुर, सद, वि, तथा अभि उपसर्ग के योग से बने शब्द यथा दुरूपयोग (दुर + उपयोग), सदुपयोग – सत् + उपयोग, विनम्र (वि + नम्र) एवं अभिमानी (अभि + मानी) आए हैं। वे शब्दांश जो शब्द के पूर्व में जुड़कर शब्द के अर्थ में परिवर्तन अथवा विशेषता उत्पन्न करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। आप भी इन उपसर्गों से बने पाँच–पाँच शब्द लिखिए।
5. इस पाठ का एक छोटा अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलिए। उत्तर पुस्तिकाओं का अदल–बदल कराकर विद्यार्थियों से उनका परीक्षण कराएँ। शिक्षक श्यामपट पर अनुच्छेद लिखेंगे।
6. दीर्घजीवी शब्द दीर्घ+जीवी दो शब्दों से मिलकर बना है। इसी प्रकार दो शब्दों को मिलाकर पाँच नए शब्द और बनाइए, जैसे– काम+चोर से बना कामचोर।
7. इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

AGH9ZJ

1. निम्नलिखित दोहों पर समझ बनाते हुए पढ़िए–
   बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि
   हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।–*कबीरदास*
2. हमारी वाणी में कटुता के क्या कारण हो सकते हैं? हम किसी के प्रति अपमानजनक भाषा और गाली का प्रयोग क्यों करते हैं? इस विषय पर अपने साथियों के साथ चर्चा कर अपने–अपने विचारों को उदाहरण के साथ लिखिए।
   - बानी बोल अमोल है, जो कोई जाने बोल।
     पहले भीतर तोलिए, फिर मुख बाहिर खोल।। – *रहीम*
   - ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोए।
     औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होए।। – *कबीर*
   - खीरा मुख ते काटिए, मलिए लोन लगाय।
     रहिमन कड़वे मुखन कों, चहिए यही सजाय।। – *रहीम*

   इस प्रकार के अन्य दोहों, सूक्तियों और उद्धरणों का संग्रह कर कक्षा में साथियों के साथ शिक्षक के सहयोग से चर्चा कीजिए।
3. किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में आप पाँच बातें बताएँ जिनका बोलना या तो आपको बहुत अच्छा लगता है या अच्छा नहीं लगता।
4. कोमल वाणी के महत्व पर किसी कवि की दो पंक्तियाँ खोजिए और कक्षा में सुनाइए।